

पेननिसुलर रॉक 'अगम'

हाल ही में, भारतीय वैज्ञान संस्थान (IISc), बंगलूरु के शोधकर्ताओं द्वारा उन विभिन्न प्रयावरणीय कारकों (शहरीकरण सहित) को समझने के लिये एक अध्ययन किया गया है जो पेननिसुलर रॉक अगम/दक्षणि भारतीय अगम की उपस्थिति को प्रभावित कर सकते हैं।

पेननिसुलर रॉक अगम:



- **परचियः**
 - पेननिसुलर रॉक अगम (वैज्ञानिक नाम— समोफलिस डॉर्सालसि) एक प्रकार की उद्यान छपिकली है, जिसकी उपस्थितिदिक्षणि भारत में मुख्य रूप से देखी जा सकती है।
 - इस छपिकली का आकार अपेक्षाकृत रूप से बड़ा है, जो नारंगी और काले रंग की होती है।
 - ये अपने शरीर से ऊष्मा उत्पन्न करने में सक्षम नहीं होती हैं, इसलिये वे बाह्य स्रोतों जैसे सूर्य के प्रकाश से गरम चट्टानों अथवा मैदानों से ऊष्मा प्राप्त करनी पड़ती हैं।
- **भूगोलः**
 - यह मुख्य रूप से भारत (एशिया) में पाई जाती है।
 - भारतीय राज्य तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बहिर छपिकली की बहुतायत आबादी देखी जाती है।
- **प्राकृतिक वासः**
 - यह प्रीकोशयिल प्रजाति के अंतर्गत आता है।
 - प्रीकोशयिल प्रजातियाँ वे हैं जिनमें जन्म के क्षण से ही अपेक्षाकृत प्रपिक्व और धूमने-फरिने में सक्षम होते हैं।
- **सुरक्षा की स्थितिः**
 - [IUCN रेड लिस्ट](#) : कम चिनीय
 - [वनय जीवों एवं वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेशन](#) : लागू नहीं
 - [वनयजीव संरक्षण अधिनियम, 1972](#) : लागू नहीं

छपिकली के बारे मेंः

- रॉक अगम संकेत कर सकती है कि शहर के कौन से हिस्से गरम हो रहे हैं और उनकी संख्या बढ़ती है कि खाद्य जाल कैसे बदल रहा है।
 - छपिकलियों को बाहरी स्रोतों जैसे गरम चट्टान या दीवार पर धूप वाले स्थान से गर्मी की तलाश होती है क्योंकि वे अपने शरीर से गर्मी उत्पन्न नहीं करती हैं।
- ये छपिकलियों कीड़े खाती हैं तथा स्वयं रैप्टर, सौंप और कुत्तों द्वारा खा ली जाती हैं, वे उन जगहों पर नहीं रह सकतीं जहाँ कीड़े नहीं होते हैं।

- कीड़े स्वस्थ पारस्थितिकी तंत्र के महत्त्वपूर्ण घटक हैं क्योंकि **प्राण** सहित कई सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- इसलिये रॉक अगमों की उपस्थितिपारस्थितिकी तंत्र के अन्य पहलुओं को समझने हेतु महत्त्वपूर्ण मॉडल प्रणाली प्रस्तुत करता है।

स्रोतः द हंडू

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/peninsular-rock-agama>

